वर्ष 6, अंक 71, मार्च 2021
ISSN 2454-2725
Peer Reviewed Journal
Impact Factor: 1.888 [GIF]

अंक 71

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

जनकृति

मार्च 2021

JANKRITI

Photo by CDD on Multidiciplinary International Monthly Magazine

संपादक
डॉ. कुमार गौरव मिश्रा

Editor
Dr. Kumar Gaurav Mishra

Volume 6, Issue 71, March 2021 ISSN: 2454-2725
(Peer-Reviewed) (विशेषज्ञ समीक्षित)

JANKRITI जनकृति

Multidisciplinary International Magazin । बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

मार्च 2021

संपादकीय कार्यालय: फ्लैट जी-2, बागेश्वरी अपार्टमेंट,
आर्यापुरी, रातू रोड़, रांची, 834001, झारखंड, भारत
ईमेल: jankritipatrika@gmail.com
वेबसाईट: www.jankriti.com
संपर्क: 8805408656

इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए प्रकाशक से अनुमति आवश्यक है।

अनुक्रम

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
	कला-विमर्श	
1.	आदिवासी अस्मिता के सवाल और हिन्दी रंगमंच: डॉ. अनिल शर्मा	10-18
2.	प्रारम्भिक भोजपुरी सिनेमा में गीत-संगीत और उसका वैशिष्ट्य: डॉ. संगीता राय	19-36
3.	लोकगीतों के फकीर बादशाह : देवेंद्र सत्यार्थी- बी आकाश राव	37-50
	दलित एवं आदिवासी -विमर्श	
4.	समकालीन दलित महिला काव्य में स्त्री का प्रतिरोध: उषा यादव	51-57
5.	हिंदी कविता में आदिवासी प्रतिरोध: विकल सिंह	58-65
	भाषिक-विमर्श	
6.	दक्खिनी भाषा, साहित्य और इतिहास का पुनःपाठ: राजकुमार	66-74
	मीडिया-विमर्श	
7.	दूसरे दौर की पत्रकारिता और समसामयिक समीकरण: डॉ. सरोज कुमारी	75-80
	शिक्षा-विमर्श	
8.	GANDHIAN EDUCATION AND ITS RELEVANCE FOR SUSTAINABLE RURAL DEVELOPMENT IN INDIA: Rajni Kant Dixt	81-90
	स्त्री- विमर्श	
9.	प्रतिरोधी समाजव्यवस्था एवं इक्कीसवीं सदी की हिंदी स्त्री आत्मकथाएँ: सुप्रिया प्रभाकर जोशी	91-97
10.	स्त्री चेतना में महादेवी वर्मा के स्वर: डॉ. शमा खान	98-102
11.	'वर्तमान समय में नारी की बदलती दशा व दिशा' ('पंचकन्या' उपन्यास के विशेष संदर्भ में): वंदना पाण्डेय	103-108
	साहित्यिक-विमर्श	
12.	21 वीं सदी में हिन्दी भाषा का सवाल- एक वाजिब सवाल (हिन्दी उपन्यासों के विशेष संदर्भ में): डॉ. मंजू कुमारी	109-136

13.	मुक्तिबोध की पहचान का संघर्ष: अभी अलिखित पुस्तक हूँ! - रमेश कुमार राज	137-146
14.	निर्मल वर्मा के उपन्यासों में मूल्य-विघटन से प्रभावित बाल-जीवन: डॉ. सोमाभाई जी. पटेल	147-151
15.	स्कन्दगुप्तः राष्ट्रीय चेतना का जीवन्त दस्तावेज: ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह	152-162
16.	संत कबीर के काव्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन: गौरव वर्मा	163-170
17.	राकेश कबीर की कविताओं में पर्यावरण चिंतन: लक्ष्मी डागर	171-176
18.	मीरा के काव्य में स्त्री मुक्ति के स्वर: कुमकुम पाण्डेय	177-182
19.	नागार्जुन: कविता की अदालत में खड़ा जनता का वकील: बिमलेंदु तीर्थंकर	183-189
20.	जहां कोई वापसी नहीं :विकास या विस्थापन- डॉ. बीना जैन	190-199
21.	एक कथाकार के रूप में कुँवर नारायण: डॉ. अमरनाथ प्रजापति	200-210
22.	आदिवासी स्त्री के अंतर्मन और बाह्य जीवन की बेबाक अभिव्यक्ति: डॉ. गंगाधर चाटे	211-217
23.	अशोक वाजपेयी का मृत्यु चिंतन: संतोष कुमार	218-232
24.	अंधविश्वास को मिटाने वाले प्रकाश पुंजः संत गुरू घासीदास-मनीष कुमार कुर्रे	233-243
25.	प्रेमचंद के आलोचक और आलोचकों के प्रेमचंद: सुशील द्विवेदी	244-250
	राजनीतिक- विमर्श	
26.	लोकतंत्र के सच्चे प्रहरी: लोकबंधु राजनारायण- निशा राय	251-256
27.	गांधी आश्रम : अवधारणा, कार्य एवं प्रभाव- प्रिंस कुमार सिंह	257-261
	पुस्तक समीक्षा	
28.	समीक्ष्य पुस्तक - मैं कैसे हँसू (कहानी संग्रह) समीक्षा आलेख - कठिन समय का दस्तावेज - मैं कैसे हँसू: सुषमा मुनीन्द्र	262-265

जहां कोई वापसी नहीं :विकास या विस्थापन

डॉ. बीना जैन*

आधुनिक साहित्य में आदिवासियों के अस्तित्व और अस्मिता से जूझने वाला आदिवासी विमर्श, दलित और स्त्री-विमर्श की अपेक्षा सबसे नया विमर्श है जो आदिवासियों के जीवन, उनकी प्राकृतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सम्पदा के अपहरण और लूट के प्रति चिंता व्यक्त करता है। 1991 में भूमंडलीकरण और उदारीकरण के बाद इस लूट की प्रकिया में तेजी आने से आदिवासियों के प्रतिरोध और अपने हकों के लिए उठने वाली आवाज न केवल राजनैतिक स्तर पर मुखर हुई वरन् साहित्य- सृजन का भी अंग बनी। आज आदिवासियों पर लिखा गया तमाम साहित्य उनके जीवन की विविध परतों को खोलता है, जिसमें उनके जीवन के राग-रंग, नदी, पहाड़, पेड़, आकाश, धरती, संस्कृति, भाषा उपस्थित है तो उनकी गरीबी, बेरोजगारी, अन्याय, छल-कपट, शासन-व्यवस्था की संवेदनहीन कार्यशैली, ज़्यादतियों से उपजा दंश भी शामिल है। लेकिन ऐसा नहीं कि साहित्यिक स्तर पर उनका संघर्ष और दंश कभी अभिव्यक्त न हुआ हो। आदिवासी विमर्श से पूर्व कई लेखकों ने उनके जीवन और समस्याओं को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। फणीश्वर नाथ रेणु के 'मैला आँचल', नागार्जुन के 'वरुण के बेटे', उदयशंकर भट्ट के 'सागर लहरें और मनुष्य', राजेन्द्र अवस्थी के 'जंगल के फूल', शिव प्रसाद सिंह के 'शैलूश' उपन्यास व भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में आदिवासी समाज अपनी पीड़ाओं, अत्याचारों और संघर्षों सहित उपस्थित है। निर्मल वर्मा भी उसी श्रेणी में अपना स्थान बनाते हैं। वर्ष 1983 में निर्मल वर्मा को दिल्ली में स्थित लोकायन संस्था की ओर से सिंगरौली में होने वाले विकास का निरीक्षण करने के लिए वहाँ जाने का अवसर प्राप्त हुआ था। 'जहां कोई वापसी नहीं' मध्य प्रदेश के उसी सिंगरौली जिले को आधार बनाकर लिखा गया रिपोर्ताज है जो न केवल आदिवासियों के दुख -दर्द का साक्षात् अनुभव व्यक्त करता है वरन् उनके विस्थापन से जुड़े अनेक पहलुओं और पर्यावरणीय समस्याओं को भी उजागर करता है। सिंगरौली के प्राकृतिक परिवेश ,उसके वैभव और समृद्धि के मध्य जीने वाली आदिवासी जातियों के अतीत , वर्तमान और भविष्य के मध्य विकास के द्वारा खींची गई कभी न मिटने वाली विनाश की रेखा उनकी जीवन पद्धति में जिस फाँक को पैदा कर देती है ,यह रिपोर्ताज उसे भली -भांति विश्लेषित करता है। सिंगरौली के गांवों के मध्य से की गई यात्रा निर्मल वर्मा के अनुभवों ,उनकी दृष्टि और संवेदनात्मक अनुभूतियों को समेटती हुई विकास से विस्थापन तक का आंखों -देखा लेखा -जोखा प्रस्तुत करती है इसीलिए अधिकांश लोग इसे यात्रा -वृतांत की संज्ञा देते हैं लेकिन ‘धुंध से उठती धुंध' जो निर्मल वर्मा की डायरी ,नोट्स ,जर्नल्स,यात्रा -संस्मरण का संग्रह है, में स्वयं निर्मल